शिक्षा के प्रति प्रवासी श्रमिकों में जागरूकता

डा0 प्रेमलता* और डा0 शालिनी सिंह**

सारांश

भारतवर्ष गाँवों का देश है तथा ग्रामीण जीवन की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। कृषि कार्य की प्रवृत्ति मौसमी होती है। कृषि के अतिरिक्त गाँवों में अन्य उद्योग धन्धों के न होने के कारण वर्ष में लगभग छः माह व्यक्ति बेरोजगार रहते है। इन बेरोजगारी के दिनों में वह देश व राज्य के अन्य भागों में जहाँ कार्य की उपलब्धता होती है, जाकर कार्य करते हैं और पुनः अपने मूल निवास स्थान पर लौट आते हैं। इन श्रमिकों का स्वयं का तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों का शिक्षा स्तर क्या है व शिक्षा के प्रति उनकी कितनी जागरूकता है वह इस शोध के माध्यम से दर्शाया गया है। इन श्रमिकों का शिक्षा स्तर निम्न स्तर का है, परन्तु ये अपने बच्चों का शिक्षा स्तर उच्च श्रेणी का चाहते हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा का मानव जीवन में अमूल्य योगदान रहा है, क्योंकि यह व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति में सामाजिक गुणों का विकास होता है। शिक्षा वैयक्तिक जीवन की अमूल्य निधि है जो उसके व्यवसायिक जीवन के चयन में सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति परम्पराओं से हटकर व्यवसाय चयन की कुशलता प्राप्त करता है साथ ही साथ अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित कुशलता के संदर्भ में ज्ञान होता है। आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा और व्यवसाय एक दूसरे से इस तरह अंर्तसम्बन्धित हो गये है कि शिक्षा को समाज में आर्थिक आधार के एक अंग के रूप में देखा जाने लगा है।

शिक्षा का रूप प्रत्येक युग, देश और समाज में बदलता रहा है, लेकिन शिक्षा का उद्देश्य सदैव ज्ञान प्राप्त करना रहा है। इस सम्बन्ध में फिलिप्स का कथन उचित ही प्रतीत होता है कि ''शिक्षा वह संस्था है जिसका केन्द्रीय मूल्य ज्ञान प्राप्ति है।''

अपने संकुचित अर्थ में शिक्षा समाज की वह व्यवस्था है जो संस्थाओं के माध्यम से ही दी जाती है। अपने व्यापक अर्थ में शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया है। शिक्षा में शिक्षक और शिश्य के अतिरिक्त एक तृतीय तत्व सामाजिक शक्तियाँ भी हैं। शिक्षा में इन तत्वों की पारस्परिक क्रिया निहित है।

जॉन डी0 वी0 ने लिखा है कि हमें जिस व्यक्ति को शिक्षित करना है वह सामाजिक व्यक्ति है और समाज व्यक्तियों की आंगिक एकता है। यदि हम व्यक्तियों में से सामाजिक तत्व निकाल दें तो हमारे पास व्यक्ति की एक कल्पना मात्र रह जाती है। इसलिए शिक्षा व्यक्ति की क्षमताओं, रूचियों तथा आदतों में मनोवैज्ञानिक सूझ–बूझ से प्रारम्भ होनी चाहिए, जिसमें कि व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो सके।

शिक्षा मनुश्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती है। इसे अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है उसे अपने जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार, विचार और दृश्टिकोण में परिवर्तन करती है जो समाज और देश तथा विश्व के लिए हितकर होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रवासी श्रमिकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता, उनके परिवार के सदस्यों की शैक्षणिक स्थिति को ज्ञात करना उनके बच्चों की शैक्षणिक प्रत्याशाओं तथा सरकार द्वारा प्रदत्त विभिन्न शैक्षणिक योजनाओं तथा कार्यक्रमों की सुविधाओं के लाभ प्राप्त करने का अध्ययन किया है। अध्ययन द्वारा संकलित आंकड़ों का प्रदर्शन सारणियों द्वारा किया गया है।

अनुसंधान के उद्देश्य

1. प्रवासी श्रमिकों के स्तर को ज्ञात करना।
2. प्रवासी श्रमिकों के माता–पिता, पत्नी और बच्चों के शैक्षणिक स्तर को ज्ञात करना, प्रवासी श्रमिकों के पारिवारिक सदस्यों के शैक्षणिक स्तर को ज्ञात करना।
3. सरकार द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविध्णाओं का लाभ प्राप्त करना तथा लाभ प्राप्त न होने के कारणों का अध्ययन करना।

*वरिष्ठ प्रवक्ता व विभागाध्यक्षा, समाजशास्त्र विभाग, दाऊ दयाल महिला (पी0जी0) कॉलेज, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश।
**प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, दाऊ दयाल महिला (पी0जी0) कॉलेज, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश।

4. बच्चों की शैक्षणिक प्रत्याशाओं को ज्ञात करना।
5. शैक्षणिक समस्याओं को ज्ञात करना।

परिकल्पनाऐं

1. प्रवासी श्रमिकों का शैक्षणिक स्तर निम्न है।
2. प्रवासी श्रमिकों के पारिवारिक सदस्यों (माता–पिता, पत्नी और बच्चों) का शैक्षणिक स्तर निम्न है।
3. प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को सरकार द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है।
4. प्रवासी श्रमिकों में बच्चों की शैक्षणिक प्रत्याशाऐं उत्कृश्ट हैं।
5. शैक्षणिक समस्ओं के कारण उनके परिवार के बच्चे अपेक्षित शैक्षणिक प्रगति नहीं कर पा रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र अलीगढ़ जनपद है। यह जनपद उत्तर प्रदेश का एक विकसित कृशि प्रधान जनपद है। यह जनपद विश्व में तालों के उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। इस जनपद में विभिन्न कुटीर उद्योग, ताला एवं मेटल कार्य से सम्बन्धित छोटे और बड़े कारखाने सम्पूर्ण जनपद में फैले हुए हैं। इस कारण श्रमिकों का इस जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों से आना अधिक होता है।

इस अध्ययन क्षेत्र का चुनाव निर्दशन इकाईयों की उपलब्धता, अध्ययन क्षेत्र का आकार, अध्ययन क्षेत्र की विस्तृत जानकारी होना आदि को दृश्टिगत रखते हुए किया गया है।

शोध विधि व उपकरण

1. अध्ययन के उद्देश्य के आधार पर उद्देश्यपूर्ण निर्दशन पद्धति के द्वारा श्रमिकों का चयन किया गया।
2. संरचित साक्षात्कार निर्देशिका का उपयोग
3. अध्ययन के उद्देश्य के आधार पर साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

प्रवासी श्रमिकों का शैक्षणिक स्तर

क्रम.सं.	शैक्षणिक स्तर	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	113	37.67%
2	प्राइमरी तक	71	23.67%
3	जूनियर हाईस्कूल तक	48	16%
4	हाईस्कूल तक	39	13%
5	इण्टरमीडिएट तक	29	9.66%
	योग	300	100%

प्रवासी श्रमिकों के पिता का शैक्षणिक स्तर

क्रम.सं.	पिता का शैक्षणिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	209	69.67%
2	प्राइमरी तक	63	21.00%
3	जूनियर हाईस्कूल तक	28	9.33%
	योग	300	100%

प्रवासी श्रमिकों की माता का शैक्षणिक स्तर

क्रम.सं.	माता का शैक्षणिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	267	89%
2	प्राइमरी तक	30	11%
	योग	300	100%

प्रवासी श्रमिकों की पत्नी का शैक्षणिक स्तर

क्रम.सं.	शैक्षणिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	176	67.43%
2	प्राइमरी तक	53	20.30%
3	जूनियर हाईस्कूल तक	25	9.58%
4	हाईस्कूल तक	07	2.68%
	योग	261	100%

प्रवासी श्रमिकों के बच्चों का शैक्षणिक स्तर

क्रम सं	शैक्षणिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	जूनियर हाईस्कूल तक	107	40.99%
2	हाईस्कूल तक	65	24.91%
3	इण्टरमीडिएट तक	45	17.24%
4	अन्य (अध्ययन नहीं किया या बच्चे नहीं हैं)	44	16.86%
	योग	261	100%

अध्ययन से संकलित तथ्यों के विवेचन से स्पष्ट होता है कि श्रमिकों तथा उनके माता–पिता, पत्नी तथा बच्चों का (पारिवारिक सदस्यों) शैक्षणिक स्तर अत्यन्त ही निम्न है। श्रमिकों का एक बड़ा वर्ग तो हाईस्कूल तक शिक्षित भी है तथा उनके बच्चे भी हाईस्कूल तक शिक्षित हैं किन्तु उनकी पत्नी, माता–पिता सभी अधिकांश अशिक्षित हैं। यह आंकड़े विकासशील समाज में श्रमिकों की शिक्षा के प्रति नगण्य उन्मुखता के परिचायक हैं।

सरकार द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ प्राप्त करना

श्रमिकों के स्वयं/परिवार के बच्चों ने सरकार द्वारा प्रदत्त लाभ प्राप्त करना

क्रम.सं.	शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ प्राप्त करना	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	137	56.15%
2	नहीं	107	43.85%
	योग	244	100%

अधिकांश श्रमिकों के स्वयं/परिवार के जो बच्चे पढ़ रहे हैं वे सरकार द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ प्राप्त कर रहे है।

बच्चों की शैक्षणिक प्रत्याशायें

श्रमिकों से ज्ञात किया गया है कि वे अपने बच्चों को कहाँ तक पढ़ाना चाहते है।

क्रम.सं.	बच्चों की शैक्षणिक प्रत्याशायें	संख्या	प्रतिशत
1	हाईस्कूल तक	143	58.61%
2	इण्टरमीडिएट तक	64	26.23%
3	स्नातक तक	26	10.66%
4	स्नातकोत्तर तक	11	4.50%
	योग	244	100%

शैक्षणिक समस्याऐं

श्रमिकों से ज्ञात किया है कि उन्होंने बच्चों को पढ़ाने के समय कौन–कौन सी शैक्षणिक समस्याओं को महसूस किया है।

क्रम.सं	महसूस की गयी शैक्षणिक समस्याऐं	संख्या	प्रतिशत
1	विद्यालय का घर से दूर होना तथा संसाधनों का अभाव	125	51.22%
2	शैक्षणिक योजनाओं का वास्तविक रूप में लाभ न मिलना	107	43.85%
3	कोई भी शैक्षणिक समस्या महसूस नहीं की	12	4.92%
	योग	244	100%

स्पष्ट है कि अधिकांश श्रमिकों ने विद्यालय का घर से दूर होना, संसाधनों का अभाव, शैक्षणिक योजनाओं का वास्तविक रूप से लाभ न मिलने को प्रमुख शैक्षणिक समस्याओं के रूप में महसूस किया है।

निष्कर्ष

1. अधिकांश श्रमिकों का शैक्षणिक स्तर निम्न है, केवल 9.66: श्रमिक इण्टमीडिएट तक शिक्षित है। ये इनके निम्नतम शैक्षणिक स्तर का परिचायक है।
2. प्रवासी श्रमिकों के पारिवारिक सदस्यों का शैक्षणिक स्तर निम्न है। अधिकांश प्रवासी श्रमिकों के पारिवारिक सदस्य अशिक्षित है।

3. अधिकांश श्रमिकों के परिवार के जो बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उनमें से अधिकांश (56.15:) सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
4. अधिकांश प्रवासी श्रमिकों में अपने बच्चों की शैक्षणिक प्रत्याशाऐं उत्कृष्ट हैं। वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना चाहते हैं।
5. अधिकांश प्रवासी श्रमिकों ने विद्यालय का घर से दूर होना तथा संसाधनों का अभाव को प्रमुख शैक्षणिक समस्याऐं माना है।

समस्या एवं सुझाव

अध्ययन से संकलित तथ्यों के विवेचन से स्पश्ट होात है कि मौसमी प्रवासी श्रमिकों तथा उनके पारिवारिक सदस्यों (माता, पिता, पत्नी तथा बच्चों) का शैक्षणिक स्तर अत्यन्त ही निम्न है। यह आंकड़े विकासशील समाज में श्रमिकों की शिक्षा के प्रति नगण्य उन्मुखता के परिचायक हैं।

जिन प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को सरकार द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है। उनका मानना है कि यदि सरकार की शैक्षणिक प्रोत्साहन हेतु विभिन्न योजनाऐं एवं कार्यक्रम नहीं होते तो हमारे लिए यह सम्भव नहीं था कि हम अपन बच्चों को पढ़ा सकें क्योंकि हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय है। जिन प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है, उन्होंने इसका प्रमुख कारण भ्रश्टाचार, अधिकारियों का अपेक्षित सहयोग न मिलना, योजनाओं व कार्यक्रमों का उचित क्रियान्वयन न होना माना है।

प्रवासी श्रमिकों ने प्रमुख शैक्षणिक समसस्याओं के रूप में विद्यालय का घर से दूर होना, विद्यालय में संसाधनों का अभाव होना तथा शैक्षणिक योजनाओं का वास्तविक रूप में लाभ न मिलने को माना है। इन्हीं शैक्षणिक समस्याओं के कारण उनके परिवार के बच्चे अपेक्षित शैक्षणिक प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। आर्थिक समस्या भी उनके बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बाधक है।

प्रवासी श्रमिकों का सुझाव है कि ग्रामीण समाज के शैक्षणिक वातावरण को उन्नत करने के लिए सरकार को वांछित प्रयास करने चाहिए। भ्रश्टाचारियों, सहयोग न करने वाले अधिकारियों के विरूद्ध कार्यवाही करनी चाहिए। शैक्षणिक योजनाओं व कार्यक्रमों का उचित रूप से क्रियान्वयन होना चाहिए। इन सभी का बच्चों को लाभ मिलना चाहिए। शैक्षणिक वातावरण का विकास करने के लिए समाज सेवकों, पूँजीपतियों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं की सदस्यता ली जा सकती है, साथ ही स्थानीय नागरिकों की एक निगरानी समिति भी बनानी चाहिए, जो शैक्षणिक योजनाओं को प्रभावी रूप में लागू करने में मदद करे।

REFERENCES

Bogardus E.S. “Sociology” Mac Millian and Co., New York, 1952 P. 255

Shekhar Raj, “Regional Cultures in Metro Polis- A Problem of Communication and Integration” Ph.D. Thesis of Agra University, Agra 1993, PP 103-110.

Zakaria K.C., “Migrants in Greater Bombay” Asia Publishing House, Bombay, 1968, P 61.

Giri V. V., “Labour Problem in Indian Industry”, Asia Publishing House, Delhi 1957

Best J. W., “Research in Education” Practice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi, 1963.